INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

संताली भाषा में रूपिम का अभिनिर्धारण

डॉ पाल्टन मुर्मू
सहायक अध्यापक
संताली विभाग
सिदो–कान्हो–बिरसाविश्वविद्यालय
पुरूलिया
मो–8944937478

सारांश–

संताली भाषा में रूपिम शुद्ध रूप से स्वनिमों का समूह है। ऐसी स्थिति में सैदान्तिक विवेचन से क्रम में यह अवश्य प्रतीत होता है कि भाषा के प्रवाह को रूप रचना की दृष्टि से विळाक्त किया जाए और तदुपरान्त उन्हें खण्डों में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। वर्गीकरण सबसे पहले ध्वनि पर विचार करना होगा, उसके बाद ही रूप रचना के अध्ययन संभव है। पर परिभाषा के अनूसार ध्वनियों के वर्गीकरण और रूप रचना के अध्ययन से ही रूपिम का सम्यक् निर्धारण संभव है। ऐसा प्रतीत होता है कि परिभाषा देने के बाद स्वयं ब्लूमफिल्ड के लिए इसका व्यावहारिक प्रतिफलन दुष्कर प्रतीत हुआ होगा। इसलिए रूपिम के निर्धारण के लिए अपनी ही परिभाषा की मान्यता मे उन्हें परिवर्तन लाने की आवश्यकता पड़ी। संताली में अबद्ध रूपिम में मुक्त रूपिम के साथ सजीव और निर्जीव आधार द्विवचन और बहुवचन बनाया जाता है। इस प्रकार संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है

मूल शब्द– पद विज्ञान, रूपग्राम, रूपिम, व्याकरण

तथ्य विश्लेषण–

संताली में अबद्ध रूपिम में मुक्त रूपिम के साथ सजीव और निर्जीव आधार द्विवचन और बहुवचन बनाया जाता है। इस प्रकार संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है, एवं याक् ,किन, आकिन, आक् को, याक् कु, आक् कु रहे तो द्विवचन और वहुवचन निर्जीव का निर्धारण करते है।संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है,

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

एवं याक् ,किन, आकिन, आक् को, याक् कु, आक् कु रहे तो द्विवचन और वहुवचन निर्जीव का निर्धारण करते है। कालान्तर में उन्होंने अनुभव किया कि “ध्वन्यात्मक वैकल्प रूप” की परिकल्पना के बिना रूपिम का सहज निर्धारण संभव नहीं। इसलिए उन्होंने उदाहरण स्वरूप तीन उदाहरण को प्रस्तुत किया है–

संताली में – पुंड –पुंडिच = इच्,

हेंदे – हेंदेयिच् = यिच

बेरेल – बेरेलाक् = आक्

हेंदे – हेंदेयाक् =याक्

उपर्युक्त उदाहरण में बद्‌ध रूपिम से सजीव औा निर्जीव का निर्धारण इच्, यिच् ,आक् और याक् द्वारा होता है।

अंग्रजी में – Glass – Glasses = iz

Pen – Pens = z

Book – Books = s

जब ऐसे उदाहरणों पर ब्लूमफिल्ड महोदय का ध्ययन गया तो वे इस निष्कर्ष पर आये कि अबद्‌ध रूपिम का आधार सहवर्ती रूप के अन्तिम स्वनिम द्वारा निर्धारित होता है। इज (iz) का व्यवहार स्पर्शसंघर्षी सिस् ध्वनियों के पूर्व होता है। यथा

Glasses, Roses, Dishes, Charches

इसी प्रकार बहुवचन बनाते समय ज–(z) अन्य घोष स्वनियों के बाद व्यवृहत होता है। यथा–

Boys, Ribs, Pens, Cars

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

इनके अतिरिक्त अन्य सभी आर्घाष ध्वनियों बाद बहुवचन बनाते समय स –(s) ध्वनि का योग होता है, यथा–

Books , Cliffs

हेंदे – हेंदेकिन – हेंदे को, हेंदे कु } सजीव

पुंड – पुंडकिन – पुंडको, पुंडाक् कु } निर्जीव

इस प्रकार संताली में अबद्ध रूपिम में मुक्त रूपिम के साथ सजीव और निर्जीव आधार द्विवचन और बहुवचन बनाया जाता है। इस प्रकार संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है, एवं याक् ,किन, आकिन, आक् को, याक् कु, आक् कु रहे तो द्विवचन और वहुवचन निर्जीव का निर्धारण करते है।

रूपिम के निर्धारण में एक अन्य प्रकार की कठिनाई उपस्थित होती है। अंग्रजी में शीप (sheep) जैसे शब्दों के एक वचन और बहुवचन रूप में कोई अन्तर नहीं मिलता । ऐसी स्थिति कि लिए उन्होंने ´ शुन्य´ का उपरूप या संरूप हो सकता है , किन्तु इसका यह कभी– कभी नहीं होता कि सभी ´उपरूप या संरूप´ शून्य ही है। इस प्रकार शुन्य उपरूप की विशेष महता तो है, किन्तु कठिनाई यह है कि ´ शुन्य´ उपरूप के साथ ब्लूमफिल्ड की रूपिम– विषयक परिभाषा – अन्य रूप से ध्वन्यात्म अर्थात्म सादृश्य नहीं – सटीक नहीं बैठती है।

रूपिम की अभिनिर्धारण के लिए एक नीडा तथा एलसन ने कुद सिद्धान्तों का विवेचना किया है। वे सिद्धान्त अंग्रजी भाषा पर लागू होते है। संताली और हिन्दी भाषा को ध्यान में रखते हुए, यहां रूपिम निर्धारण के कुछ सिद्धान्त प्रस्तुत है–

1. वैसे रूप जो उत्पति की दृष्टि से स्वनिमिक रूपों में तो समान हो ही अर्थ में भी स्पष्ट रूप से उनमें यदि समता हो तो ऐसे स्वनिमिक रूप से रूपिम की रचना संभव है।

   संताली में – ओनाल – ओनोलिया़

   ओनोड़हे – ओनोड़हिया़

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

सिकार – सिकारिया

हिन्दी में – धनना – धनिया

जड़ना – जड़िया

छलना – छलिया

ओनोल, ओनोड़हे तथा सिकार की धातू में / इया/प्रत्यय का यदि योग हो ,तो क्रमशः ओनोलिया, ओनोड़हिया तथा सिकारिया रूप निर्मित होते हे। चुंकि तीनों में एक ही स्वनिमिक रूप योग है, इसलिए स्वाभावतः तीनों एक ही प्रकार के अर्थ का दयोतन करते है। "इया" अबद्ध रूप है, जिसका स्वतः तो कुछ नहीं होता , लेकिन जिस अर्थ की संकेत करता है,उसे "करनेवाला"का दयोतन होता है।

2. वे रूप ,जिसमें अर्थगत समता ताक हो किन्तु वे अपने स्वनिमिक रूप में भिन्न होतो ऐसे रूपों से भी रूपिम की रचना संभव है। हां, उसके लिये आवश्यक शर्त यह है कि भिन्नता ऐसी हो जिसकी धन्यात्मक दृष्टि से व्याख्या की जा सके।

अंग्रजी में स्वीकारत्मक शब्द को निषेधात्मक बनाने के लिए एक से अधिक पूर्वप्रत्यय का योग प्रचलित है। डिसेण्ट (decent)और एपेसेन्ट (patient)में क्रमशः /इन/(in) और इम/(im) के योग से इनडिसेन्ट (indecent) तथा इमपेशेन्ट (impatient)शब्द की रचना होती है।

संताली में – (क) ओ (ख) निर

हिन्दी में –(क) अ (ख) अन

इनके साथ मुक्त रूप के योग का प्रतिफलन इस प्रकार है–

संताली में –	(क)	ओ	खेयाल	(ख)	निर	माया
			बुझ			दाया
			भोरसा			जाला

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

हिन्दी में –	(क) अ	कथ	(ख) अन	बन
		पच		मेल
		सत्य		हित

ओखेयाल, ओबुझ, अथवा ओभोरसा से यदि निश्चय, निरदाया या निरजाला की तुलना की जाए यह स्पष्ट प्रतीत होगा कि /ओ/तथा /निर में ध्वनात्मक अर्थागत समता है दोनों

ही है कि परवर्ती व्यंजनों के द्वारा ही उनका स्थान निर्धारित होता है। इसलिए कहा जा सकता है कि निर्षधात्मक रूप बनाने के लिए मूल शब्द के द्वारा ही पूर्व प्रत्यय का निर्धारण संभव है।1

3. कुछ वैसे रूप होते है जिनमें अर्थगत समनता तो होती है। किन्तु उनके ध्वन्यात्म रूप इस प्रकार हो कि ध्वन्यात्मक दृष्टि से उनके वितरण की व्याख्या संभव पहीं हो तो वैसे आवदध रूपों के द्वारा भी रूपिम की रचना होती है।

काका – काकी,	कांड़ा – कांड़ी,	बुंढ़ा – बुढ़ी
कोड़ा – कुड़ी,	बेटा – बेटी,	कुबा़ – कुबी
लेड़ा – लेड़ी,	दादा – दादी,	भुला़ – भुली
रांडा – रांडी		

संताली में पुंलिंग से स्त्रालिंग बनाने के लिए कई प्रकार के प्रत्यय योग का प्रचलन है। भुला, कोड़ा, अथवा काका में/ई/प्रत्यय के योग से क्रमशः भुली, कुड़ी, तथा काकी शब्द की रचना होती है। किन्तु स्त्रीलिंग बनाने के लिए संताली में अन्य प्रत्यय भी है। तुलनात्मक अन्तर स्पष्ट

करने के लिए ये निम्नलिखित रूप प्रस्तुत है–

(क) भुला	ई	भुली	(ख) तारूप	पुलिंग	स्त्रीलिंग
कोड़ा		कुड़ी	सादोम	आण्डिया	ऐंगा

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

काका काकी पुसी

(क) घोड़ा | ई | घोड़ी
रस्सा | | रस्सी
नाना | | नानी

(ख) देवर | आनी | देवरानी
सेठ | | सेठानी
नोकर | | नोकरानी

पुलिंग बनाने के लिए मुख्य रूप से संज्ञा में प्राणीवाचक के साथ प्शु के लिये ´ अडिण्या´ प्रयोग होता है। पक्षियों के लिए सा¡डी का प्रयोग होता है।

स्त्रीलिंग बनाने के लिए मुख्य रूप से पुलिंग रूप में /ई/ प्रत्यय का योग तो प्रचलित है , किन्तु इनके अतिरिक्त भी कुछ अन्य रूपों का योग होता है। ऊपर का /ऐंगा/ पर प्रत्यय उन रूपों में एक है। इस प्रकार अर्थगत समानता के कारण रूपिम की रचना की हुई है।

4. रूप रचनात्मक क्रम में विकृत औपचारिक अन्तर मे रूपिम की रचना हो सकती है। किन्तु , यह तभी संभव है, जब ऐसे क्रम का कोई भाग विृति औपचारिक अन्तर तथा शुन्य रूप रचनात्मक अन्तर ही ध्वन्यात्मक – अर्थात्म सादृश्य की न्यूनतम इकाई में अन्तर दिखाने को एक मात्र अवलम्ब रह जाता है। भाषाशास्त्री हॉकेट ने भी शुन्य सहपद की मान्यता स्वीकार की। तथा उन्होंने उसे ´रिक्त रूप´ की संज्ञा दी। अंग्रजी में चाइल्ड(child) का बहुवचन चिल्ड्रेन(children) होता है। ऑक्स(ox) का ऑक्सेन(oxen) के समय चाइल्ड(child) का बहुवचन चिल्ड्रेन(children)होता तो एक बात थी। यह पता नहीं चलता कि माध्य में र वर्ण का आगमन कैसे हो गया। ´र´ (r)तो रूपिम के किसी भाग के अर्न्तगत समाहित नहीं होता । ऐसे स्थिति में भाषाशास्त्री हॉकेट ने ´र´(r) को ´रिक्त रूप´ के अर्न्तगत रखना चाहा है।

संताली में – साप् – साबोक्

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

आत् – आदोक्

माक् – मागोक्

यही स्थिति हिन्दी में ' बारम्बर और ढेलमढेल ' जैसे शब्दों की है। प्रश्न है कि रूपिमिय विश्लेषण में म्/म / को किस कोटि के अर्न्तगत वर्गीकृत किया जाए? ऐसे आवद्धध रूप को ' रिक्त रूप' के अर्न्तगत रखने पर समस्या का सहज समाधान तो हो जाता है।

जैसे – साप् – साबेया, दाल – दालेया

(iii) संरूप–

(क) ह्स्वीकरण

(ख) दीर्धाकरण

(ग) विपर्यय

(ग) पार्रवती

(क) ह्स्वीकरण

एक ही रूपिम के समान अर्थवाले विभिन्न रूपों को संरूप (Allomorph) कहते है। संरूपों में जो अधिक प्रचलित होता है, उसे रूपिम माना जाता है, शेष को संरूप।

जिन ध्वन्यात्मक या रूपात्मक परिस्थितियों में एक रूप का प्रयोग होता है, दूसरों का भी इन्हीं में होता है, या सबका अलग–अलग। यदि सबका एक ही परिस्थितियों में प्रयोग होता है तो इसका आशय यह है कि उनका आपस में विरोध है। एक के स्थान पर दूसरा भी आ जाता है, यदि ऐसा है तो उन्हें उपरूप अथवा संरूप कहते है।

कभी – कभी ऐसा देखा जाता है कि कई रूपिमों का अर्थ एक होता है। संज्ञा शब्दों का एक वचन से बहुवचन बनाने के लिए–

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

संताली में – हेंदेयाक् = हेंदे + याक् को

हेंदे + याक् कु

सासाङआक् = सासाङ + आक् को

सासाङ+ आक् कु

हिन्दी में – लडकिया = लड़की + या¡

लड़के = लड़क + ए

अंग्रेजी में – hats = hat + s

cats = cat + s

children = child + ren

oxen = ox + en.

उपर्युक्त उदाहरण में अलग– अलग रूप है। संताली में ´ याक् को, याक् कु´ का अर्थ ऐ है। वैसे ही हिन्दी में – या¡ एवं ए¡ का अर्थ एक है। स्वनिम रूप में भले ही अन्तर हो वे एक रूपिम के संरूप है।

शब्दों में प्रयुक्त आबद्ध रूपिम संताली में – ´याक्´ एवं ´आक्´ और हिन्दी में – यां एवं एका एक ही अर्थ के लिए प्रयोग किए गए है। इसलिए ये दोनो अपनी– अपनी के संरूप है।

याक् या आक् प्रत्यय है। इस प्रत्यय का प्रयोग विशेषण शब्द के साथ हुआ है। यह विशेषण की विशेषता बतलाता है। तथा या¡ एवं ए¡ वचन प्रत्यय है। इस प्रत्यय का योग संज्ञा से हुआ है। यह संज्ञा की संख्या बतलाता है, जिसे बहुवचन का बोध होता है।

संरूप के भेद–

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

(क) ध्वन्यात्मक रूवनिम वातावरण द्वारा – नियंत्रित संरूप (phonologically condition Allomorphs)

(ख) रूपात्मक वातावरण द्वारा नियंत्रित संरूप –(morphologically condition Allomorphs) संताली , हिन्दी एवं अंग्रेजी में क्रमशः विचार किया गया है–

संताली में कई उदाहरण पाए जाते है, जैसे–

सजीव	i	राम	रामिच् – संज्ञा
		पुंड	पुंडिच् – विशेषण
	ii	सुना	सुनायिच् – संज्ञा
		हेंदे	हेंदेयिच् – विशेषण
निर्जीव	i	काट	काटाक् (आक्) – संज्ञा
		बेरेल	बेरेलाक् (आक्)– विशेषण
	ii	धिरी	धिरीयाक् (याक्) – संज्ञा
		हेंदे	हेंदेयाक् (याक्) – विशेषण

एक – 'इच्' से सजीव का बोध होता है।

दो – 'यिच्' से सजीव का बोध होता है।

तीन – 'आक्' से निर्जीव का बोध होता है।

चार – 'याक्' से निर्जीव का बोध होता हे।

यहां इच्, यिच्, आक्, याक् के अर्थ एक है। अतः ये सब एक रूपिम है।

(इच् (यिच्),(–आक्),(–याक्) संरूप है।

द्विवचन में – जोमाबिन (जोम + आबिन) , आबिन

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

जोमाबेन (जोम + आबेन) , आबेन

गुपीयाबिन (गुपी + याबिन), याबिन

गुपीयाबेन (गुपी + याबेन), याबेन

यहां आबिन, आबेन, याबिन , याबेन के अर्थ एक है। अतः ये सब एक रूपिम है। (–आबिन),(आबेन),(याबिन), (याबेन) संरूप है।

बहुवचन में – जोमाको (जोम + आको 'आको'

जोमाकु (जोम + आकु) आकु'

गुपीयाको (गुपी + याको)'याको'

गुपीयाकु (गुपी + याकु) ' याकु'

यहा¡ आको, आकु, याको अथवा याकु के अर्थ एक है। अतः से सब एक रूपिम है।

आको, आकु, याको अथवा याकु संरूप है।

हिन्दी में –

हिन्दी में संज्ञा के बहुवचन बनाने के लिए 'ए' रूपिम का प्रयोग किया जाता है। 'ए' रूपिम के संरूप है–ए¡, एं, यां आदि । ये परिपूरक विवरण में है। इनमें कोई परस्पर विरोध नहीं है। जैसे–बात – बातें, किताब – किताबें, लड़का – लड़के

आदि शब्दों में 'ए' रूपिम है, और शेष संरूप है।

अंग्रेजी में – संज्ञा शब्दों के बहुवचन बनाने में 'ज' रूपिम का प्रयोग होता है। इस 'ज' के संरूप ज, सख इज, इन, रिन तथा शून्य है। 'ज' धोष ध्वनियों से अन्त होने वाले शब्दों के साथ आता है। अधोष ध्वनियों से अन्त होने वाले शब्दो 'ज' भी अघोष होकर 'स' हो जाता है। स,श, ज, सं अन्त होने वाले शब्दों के अन्त में 'ज' का उच्चरण ठीक से नहीं (grass,rose) हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति में बीच में एक स्वर (इ) आ जाता है, और यह 'इज' हो जाता है, अर्थात् 'ज' रूपिम के ज,स, इज् उपरूप या

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

संरूप ध्वन्यात्मक परिस्थितियों के कारण परिपूरक वितरण में है, लेकिन शेष तीन रूपात्मक या शाब्दिक

परिस्थितियों के कारण। क्योंकि कुछ विशेष शब्दों, रूपों या रूपिमों में ही इन रिन या शुन्य रूप का प्रयोग होता है। यहा¡ निष्कर्ष यह निकला कि परिपूरक विवरण (complimentry distribution) ध्वन्यात्मक या रूपतामक या दोनों परिस्थितियों (ponological conditioning) ij निर्भर करता है। संक्षेप में–

- /–ज/ ´ज´ को छोड़कर अन्य धोष ध्वन्यंत शब्दों के साथ
- /–स/ ´स´ ´श´ को छोड़कर अन्य ध्वन्यंत शब्दो के साथ
- /–इज़/ ´स´ ´श´ ज़, को छोड़कर अन्य शब्दो के साथ
- /–ज, –इन/ ´ऑक्स´ ´ब्रदर´ आदि कुछ सीमित शब्दो के साथ
- /–रिन/ चाइल्ड के साथ
- /–0/ ´शीप´ ´डीयर´ कॉड आदि कुछ सीमित शब्दो के साथ

ह्स्वीकरण

दो या दो से अधिक रूपिम के मिलने से स्वनिमिक का प्रतिफल जब दीर्ध से ह्स्व हो जाता है , तो उसे ह्स्वीकरण कहा जाता है। जैसे, संताली में – धिरी तथा भिड़ी शब्दों के वाचिक रूप क्रमशः ´धिरी´ तथा ´भिड़ी ´ है। स्पष्ट है कि ´धिरी´ के /ई/का/इरु में परिवर्तित हो गया है। यह ह्स्वीकरण है।

हिन्दी में –

´चौवन´ तथा ´नारंगी´ के शब्दों के वाचिक रूप क्रमशः चउअन तथा नारंगी है। स्पष्ट है कि चौवन के/औ/ का/उ/ में तथा नारंगी का/आ/अ/में परिवर्तन हो गया है। यह ह्स्वीकरण है। हिन्दी की बोली में / और/ का/अ/उ/ तथा /है/का/हइ/ के रूप में ह्स्वीकरण मिलता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

संताली में –	भागी – भा़गि ,	आडी – आ़डि
	पहिल – पा़हिल,	गुचू – गुचू
	ईल – इल	´ – ´
	सी – सि	आतू – आ़तु
	हासू – हा़सु	लाई – ला़इ

हिन्दी भाषा में ह्स्वीकरण के प्रतिफलन स्वरूप कुछ शब्दों के वाचिक रूप भी चल पड़े है। कुछ शब्द ऐसे है, जो ह्स्वीकरण के उदाहरण तो है किन्तु उनका प्रचलन – क्षेत्र केवल बोलचाल तक ही सीमित नहीं है ,रूप में भी उनका उन्मुक्त प्रचलन है। उदाहरण प्रस्तुत है–

आश्चर्य – अचरज	आलाप – अलाप
आभीर – अहीर	आसाढ़ – असाढ़
आमरस – अमरस	आराम – अराम
आफिस – अफसर	दूल्हा – दुल्हा।

(ख) दीर्घीकरण

दो या दो से अधिक रूपिम के मिलने स्वनिमिक परिवर्तन का प्रतिफलन यदि ह्स्व से दीर्ध हो जाए तो उसे दीर्घीकरण कहा जाता है।

जैसे – संताली में – 'हाऊ' शब्द का वैकलिपक रूप 'हवाऊ' भी मिलता है। यह स्थिति 'बनाऊ' और 'बेनआऊ' की है।

रूपगत ऐसे स्वनिमिक परिवर्तन की दीर्धाकरण कहा जाता है।

हिन्दी की अवधी बोली में 'भाग' शब्द का वैकल्पिक रूप 'कागा' भी मिलता है। यही स्थिति 'पिय' और 'पिया' की है–

कान – काना,	हाऊ – हआऊ
बेनाऊ – बेनआऊ	मार्शाल – मारसाल
आर्शाल – आरसाल	मुर्मू – मुरमू
आगू – आगुक	गिडी – गिडिक
ओक्तो – ओक्ते	सुपाड़ि – सुपाड़ी

इस प्रकार संस्कृत का 'तड़ाग' शब्द 'तालाब' के रूप में भी प्रचलित है। स्पष्टतः 'तालाब' में तड़ाग के/त/का दीर्घीकरण हो गया है।

हिन्दी भाषा में ह्स्व से दीर्ध के रूप में स्वनिमिक परिवर्तन के प्रतिफलन दो रूप मे मिलते है। आदि स्वर का दीर्घीकरण तथा अंत्य स्वर का दीर्घीकरण

जैसा– आदि स्वर का दीर्घीकरण –	अंत्य स्वर का दीर्घीकरण–
भक्त – भात	कंगन – कंगना
जिव्हा – जीभ	चिंह – चिंहा
पुत्र – पूत	बोझ – बोझा
लज्जा – लाज	मर्याद – मर्यादा

धोषीकरण – हिन्दी या बंगला भाषा के प्रभाव के कारण कुछ अघोष ध्वनिया¡ धेष हो जाते है, जिसे धोषीकरण कहते है, जैसे –

काण्ठाड़	– घाण्ठाड़	– क	} घ
खाण्ठाड़	– घाण्ठाड़	– ख	} घ
सिकड़िच	– सिकड़िज	– च	} ज
सित्	– सिद	– त	} द ।1

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

महाप्राणीकरण – संताली भाषा में ध्वनि परिवर्तन किसी विशेष नियमानुसार या किसी विशेष परिस्थितियों में होते है। कुछ अल्पप्राण ध्वनिया महाप्राण हो जाते है। जैसे –

कोदे	– खोदे	– क	} ख
पाल	– फाल	– प	} फ
आदोम	– आधोम	– द	} ध
बेगार	– भेगार	– ब	} भ।2

विपर्यय

किसी शब्द के उच्चारण में शीघ्रता , पूर्व संस्कार अथवा अन्य किसी कारण से स्वन – यंत्रावयव कभी– कभी असावधानी कर जाता है। परिणामस्वरूप शब्दों के वर्णक्रम में व्यतिक्रम हो जाता हे। क्रम भेद कारण अन्तर को 'विपर्यय' कहा जाता है।

संताली भाषा में शब्द विपर्यय मिलते हैं। इसमें किसी शब्द के स्वर, व्यंजन या स्वर –व्यंजन एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते है और दूसरे स्थान के पहले स्थान पर आ जाते है, उसे विपर्यय कहते है। जैसे–

पोरायनी	– पोयरानी	(र – य)
घेवरा	– घेरवा	(व – र)
घावड़ा	– घाड़वा	(व – ड)
परयाड़े	– पायराड़े	(र – य)
सोहराय	– सोरहाय	(ह – र)
परवा	– पावरा	(र – व)

उदाहरण के लिये हिन्दी के शब्द 'पहूjचाना' को भोजपुरी ने इसी रूप में अपनाया भी होगा, किन्तु कालान्तर में शब्दों के उच्चारण क्रम में अन्तर आ गया। भोजपूरी में इसका प्रचलित रूप हो गया – चहूjपना । ' पहूjचना और चहूjपना के द्वितीय और चतुर्थ

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

स्थान वाले वर्ण में स्थान कोई क्रमभेद नहीं है, किन्तु हिन्दी के इस शब्द के प्रथम औा तृतीय वर्ष भोजपुरी में क्रमशः तृतीय एवं प्रथम स्थान में आ गये है। क्रमभेद के कारण ऐसे अन्तर को 'विपर्यय' कहा जाता है।

स्थ्नानगत स्थिति के आधार पर विपर्यय के दो भेद उचित है– (क पाश्वर्ती तथा दुरवर्ती विपर्यय । दोनों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत है–

(ग) पार्श्ववर्ती

संताली में –	हिर्ला – हिरला़	तिर्ला – तिरला़
	आर्शाल – आरसाल	मुर्मू – मुरमू
	मार्शाल – मारसाल	भागीन – भागनी
	भा़गन – भा़गना	
हिन्दी में –	मिर्च – मरिच	जांघ – जंघा
	कुछ – कछु	जानवर– जनावर

(घ) दूरवर्ती

हिन्दी में–	आगना – आ¡गना
	बादल – बदरा
	काजर – कजरा
	पागल – पगला आदि।

निष्कर्ष–

संताली में अबद्ध रूपिम में मुक्त रूपिम के साथ सजीव और निर्जीव आधार द्विवचन और बहुवचन बनाया जाता है। इस प्रकार संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है एवं याक् ,किन, आकिन, आक् को, याक्

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881; IMPACT FACTOR :6.514(2020); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer Reviewed and Refereed Journal: VOLUME:10, ISSUE:1(1), January :2021
Online Copy Available: www.ijmer.in

कु, आक् कु रहे तो द्विवचन और वहुवचन निर्जीव का निर्धारण करते है।संताली में अबद्ध रूपिम में किन, को, कु, रहे तो द्विवचन और बहुवचन सजीव का निर्धारण होता है, एवं याक् ,किन, आकिन, आक् को, याक् कु, आक् कु रहे तो द्विवचन और वहुवचन निर्जीव का निर्धारण करते है। संताली रूपिम के निर्धारण में एक अन्य प्रकार की कठिनाई उपस्थित होती है। संताली भाषा में महाप्राणीकरण ध्वनि परिवर्तन किसी विशेष नियमानुसार या किसी विशेष परिस्थितियों में होते है। कुछ अल्पप्राण ध्वनियां महाप्राण हो जाते है। हिन्दी या बंगला भाषा के प्रभाव के कारण कुछ अघोष ध्वनिया घोष हो जाते है, दो या दो से अधिक रूपिम के मिलने स्वनिमिक परिवर्तन का प्रतिफलन यदि ह्रस्व से दीर्ध हो जाए तो उसे दीर्धीकरण कहा जाता है।

संदर्भ–

1. तिवारी डॉ भोलानाथ, भाषा विज्ञान, किताब महल ,इलाहाबाद 1981
2. त्रिपाठी डॉ राम छबिला, भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा, किताब महल प्रिन्टिंग डिविजन,इलाहाबाद, 2013
3. मुर्मू बाबुलाल “आदिवासी”, संताली भाषा विज्ञान,यूनिवर्सल पब्लिकेशन, राँची,
4. टुडू डॉ कृष्ण चन्द्र ,संताली का भाषा वैज्ञानिक अध्ययन,यश पब्लिकेशन, दिल्ली, 2011
5. हाँसदा प्रमोदिनी, हिन्दी–संताली साहित्य का तुलनात्मक विश्लेषण, जानकी प्रकाशन, दिल्ली, 2006